



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

गिर्ग वर्कर के लिए सामाजिक सुरक्षा
सुनिश्चित करना

गिग वर्कर के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना

सन्दर्भ

- हाल ही में, केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने गिग श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में शामिल करने के लिए एक राष्ट्रीय कानून का मसौदा तैयार करने की मांग की, जिसमें स्वास्थ्य बीमा और सेवानिवृत्ति बचत जैसे लाभ प्रदान किए जाएंगे।

भोजन-पर्याप्त भारत को भूख-मुक्त होने की भी आवश्यकता है

सन्दर्भ

- भारत की कृषि-खाद्य प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सभी के लिए स्वस्थ आहार उपलब्ध और वहनीय हो, क्योंकि इसे 2030 तक प्राप्त किए जाने वाले सतत विकास लक्ष्यों (लक्ष्य 2) में से एक के रूप में रेखांकित किया गया है।

परिचय

- भारत ने खाद्यान्न आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है, लेकिन भूख और कुपोषण को मिटाने की दिशा में यात्रा अभी भी पूरी नहीं हुई है।
- खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर होने के बावजूद, भारत भूख और कुपोषण के उच्च स्तर सामना कर रहा है, जो इसकी विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण विरोधाभास को उजागर करता है।
- खाद्यान्न-पर्याप्त भारत को भूख-मुक्त भारत होना चाहिए, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने का अवसर मिले।

शून्य भूख का महत्व क्यों है?

- भूख से मुक्ति वाला विश्व हमारी अर्थव्यवस्थाओं, स्वास्थ्य, शिक्षा, समानता और सामाजिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। यह सभी के लिए बेहतर भविष्य के निर्माण की आधारशिला है।
- इसके अतिरिक्त, भूख मानव विकास को सीमित करती है, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य और लैंगिक समानता जैसे अन्य सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- अर्थव्यवस्था:** उत्पादक, सुपोषित व्यक्ति आर्थिक विकास में योगदान करते हैं।
- स्वास्थ्य:** उचित पोषण बीमारियों को रोकता है और समग्र कल्याण में सुधार करता है।
- शिक्षा:** भूखे बच्चे प्रभावी ढंग से सीखने के लिए संघर्ष करते हैं।
- लैंगिक समानता:** सशक्त महिलाएँ भूख मिटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

खाद्यान्न पर्याप्तता और भूख का विरोधाभास

- भारत के कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जिससे देश वैश्विक स्तर पर खाद्यान्नों के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक बन गया है।
 - हालाँकि, यह उपलब्धि स्वतः ही भूख-मुक्त राष्ट्र में परिवर्तित नहीं हो जाती।
- ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2024 में भारत 127 देशों में से 105वें स्थान पर है, जो भूख के गंभीर स्तर को दर्शाता है।

- कुपोषण, बौनापन और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी व्यापक रूप से फैली हुई है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।
- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैलोरी सेवन में सुधार हुआ है, लेकिन पोषण पर्याप्तता एक चिंता का विषय बनी हुई है।
- यह विरोधाभास मुख्य रूप से भोजन के असमान वितरण और आर्थिक बाधाओं के कारण है जो कई लोगों को स्वस्थ आहार तक पहुँचने से रोकते हैं।

प्रमुख चुनौतियाँ

- असमान वितरण:** खाद्यान्न की पर्याप्तता के बावजूद, खाद्यान्न का वितरण असमान बना हुआ है।
 - विभिन्न क्षेत्रों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, किफायती और पौष्टिक भोजन तक पहुँच की कमी है।
- आर्थिक असमानताएँ:** आय असमानताएँ खाद्य असुरक्षा को बढ़ाती हैं, सबसे गरीब परिवारों को संतुलित आहार का खर्च उठाने में संघर्ष करना पड़ता है।
- जलवायु भेद्यता:** जलवायु परिवर्तन कृषि उत्पादकता को प्रभावित करता है, जिससे खाद्य उपलब्धता और कीमतें प्रभावित होती हैं।
- अवरुद्ध विकास और कुपोषण:** अत्यधिक भूख और कुपोषण सतत विकास में बाधा डालते हैं।
 - अवरुद्ध विकास 148 मिलियन बच्चों को प्रभावित करता है, जबकि 5 वर्ष से कम आयु के 45 मिलियन बच्चे कुपोषण से पीड़ित हैं।
- सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी, जिसे प्रायः छिपी हुई भूख कहा जाता है, प्रचलित है, जिससे दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएँ होती हैं।
- ये स्थितियाँ न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को खराब करती हैं बल्कि संज्ञानात्मक विकास और आर्थिक उत्पादकता को भी सीमित करती हैं।

विरोधाभास का विश्लेषण: खाद्यान्न पर्याप्तता और भूख

- आर्थिक पहुँच और वहनीयता:** मुख्य मुद्रों में से एक पौष्टिक भोजन की वहनीयता है। स्वस्थ आहार की लागत वैश्विक स्तर पर बढ़ी है, और भारत इसका अपवाद नहीं है।
 - विभिन्न घरों में, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, संतुलित भोजन खरीदने की क्रय शक्ति का अभाव है। यह भूख-मुक्त भारत को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण बाधा है।
 - नीतियों को पौष्टिक भोजन को जनसँख्या के सभी वर्गों के लिए वहनीय और सुलभ बनाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।
- पोषण की गुणवत्ता और सार्वजनिक स्वास्थ्य:** खाद्य पर्याप्तता सुनिश्चित करना केवल मात्रा के बारे में नहीं है, बल्कि भोजन की गुणवत्ता के बारे में भी है। कुपोषण से निपटने के लिए आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर आहार महत्वपूर्ण है।
 - सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों को पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों के वितरण को प्राथमिकता देनी चाहिए और जनसँख्या को स्वस्थ खाने की आदतों के बारे में शिक्षित करना चाहिए। यह सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के कारण होने वाली छिपी हुई भूख को दूर करने में सहायता कर सकता है।

- नीतिगत हस्तक्षेप और सामाजिक सुरक्षा जाल:** खाद्य पर्याप्तता और भूख के अन्तर को समाप्त करने के लिए, भारत को मजबूत नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) और मध्याह्न भोजन योजना जैसी सामाजिक सुरक्षा जाल कमज़ोर जनसँख्या को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
 - हालाँकि, इन कार्यक्रमों की निरंतर निगरानी और सुधार की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे ज़रूरतमंदों तक प्रभावी रूप से पहुँचें।
- स्थायी कृषि की भूमिका:** पर्यावरणीय स्वास्थ्य सुनिश्चित करते हुए खाद्य पर्याप्तता बनाए रखने के लिए स्थायी कृषि पद्धतियाँ आवश्यक हैं।
 - जैविक खेती को बढ़ावा देना, खाद्य अपव्यय को कम करना और आपूर्ति श्रृंखला दक्षताओं में सुधार करना एक अधिक लचीली खाद्य प्रणाली में योगदान दे सकता है।
 - ये उपाय यह सुनिश्चित करने में सहायता करेंगे कि खाद्य उत्पादन पर्यावरण से समझौता किए बिना बढ़ती जनसँख्या के साथ सामंजस्य बनाए रखें।

भूख-मुक्त भारत के लिए रणनीतियाँ

- खाद्य वितरण प्रणाली को मजबूत करना:** यह सुनिश्चित करना कि खाद्य कुशल और पारदर्शी वितरण तंत्र के माध्यम से सबसे कमज़ोर जनसँख्या तक पहुँचे।
- पोषण जागरूकता को बढ़ावा देना:** संतुलित आहार के महत्व और स्वास्थ्य को बनाए रखने में आवश्यक पोषक तत्वों की भूमिका के बारे में जनता को शिक्षित करना।
- सामाजिक सुरक्षा जाल को बढ़ाना:** ज़रूरतमंद लोगों को खाद्य सहायता प्रदान करने के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार करना, जैसे कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम और राष्ट्रीय पोषण मिशन।
- जलवायु परिवर्तन को संबोधित करना:** खाद्य उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए सतत कृषि पद्धतियों को लागू करना।
- स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच में सुधार:** कुपोषण और संबंधित स्वास्थ्य मुद्दों को दूर करने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच प्रदान करना।

भारत के प्रयास

- भारत, जो कभी खाद्यान्न का शुद्ध आयातक था, अब शुद्ध निर्यातक बन गया है।** महामारी के दौरान, सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से कुशलतापूर्वक खाद्यान्न वितरित किया, जिससे परिवारों को आपातकालीन सहायता मिली।
 - हालाँकि, भारत को कुपोषण और जलवायु परिवर्तन से संबंधित चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है।
- कुपोषण और एनीमिया:** पिछले एक दशक में कुपोषण में कमी आई है, लेकिन व्यापक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण 2016-18 से पता चला है कि 40 मिलियन से अधिक भारतीय बच्चे गंभीर कुपोषण से पीड़ित हैं।
 - इसके अतिरिक्त, 15-49 वर्ष की आयु की आधी से अधिक भारतीय महिलाएँ एनीमिया से पीड़ित हैं।

- एकीकृत बाल विकास सेवाएँ (छह वर्ष से कम उम्र के बच्चों और गर्भवती/स्तनपान कराने वाली माताओं को भोजन उपलब्ध कराना) और मध्याह्न भोजन योजना जैसे कार्यक्रम इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं।

निष्कर्ष और आगे की राह

- खाद्य-पर्याप्त भारत को भूख-मुक्त भारत भी होना चाहिए। इस लक्ष्य के लिए बहुआयामी वृष्टिकोण की आवश्यकता है जो आर्थिक पहुँच, पोषण गुणवत्ता और सतत कृषि पद्धतियों को संबोधित करता हो।
- व्यापक नीतियों को लागू करके और सामाजिक सुरक्षा जाल को मजबूत करके, भारत यह सुनिश्चित करने के करीब पहुँच सकता है कि प्रत्येक नागरिक को पर्याप्त और पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो।
- भोजन केवल जीविका नहीं है; यह हमारी संस्कृतियों और समुदायों में बसा हुआ है। इसमें लोगों को एक साथ लाने, हमारे शरीर को पोषण देने और ग्रह को बनाए रखने की शक्ति है।
- न्यूयॉर्क में SDG शिखर सम्मेलन के दौरान विश्व नेताओं ने गरीबी उन्मूलन और भूख को समाप्त करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की।
 - हालांकि, यह स्पष्ट है कि आकांक्षा और वास्तविकता के बीच के अंतर को समाप्त करने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न. भारत एक खाद्यान्न-पर्याप्त देश होने के बावजूद, भूख एक प्रचलित मुद्दा बना हुआ है। इस विरोधाभास में योगदान देने वाले अंतर्निहित कारक क्या हैं, और यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं कि खाद्यान्न-पर्याप्तता भूख-मुक्त राष्ट्र में परिवर्तित हो जाए?

